REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

नरेन्द्रकुमार हमीरभाई भादरका
श्रीमती के. एम. जे. पटेल हाइस्कुल सायमा (खंभात – गुजरात)

संक्षेपीकरण :

सामाजिक बुद्धि वह है, जो सामाजिक संबंधों के बनाने, बढ़ाने, सुधारने और उनका निर्वाह करने में सहायक सिद्धांत होता है। सामाजिक बुद्धि निम्नलिखित क्रियाओं में सहज ही देखी जाती है – मित्र बनाने में। संबंधां के सफलतापूर्वक निर्वाह में। परिस्थिति के अनुरूप बात करने में। कक्षा या समाज में सहयोग, सहानुभूति की भावना प्रदर्शित करने में। अपने व्यवहार से दूसरों का हृदय जीतने का। इस तरह सामाजिक कार्यकर्ताओं, नेताओं, सेवकों आदि में सामाजिक बुद्धि अधिक पायी जाती है। यहाँ यह समझ लेना आवश्यक है कि यद्यपि ऐसे बहुत कम व्यक्ति या बालक होते हैं जिनमें बुद्धि के ये तीनों रूप अलग–अलग और स्पष्ट दिखाई दे। फिर भी जब कोई विचारक या वैज्ञानिक किसी नए यंत्र का मूर्त रूप देता है तो यांत्रिक बुद्धि काम करती है और जब उस यंत्र को बनाने हेतु साथियों या विशेषज्ञों का अधिकतम सहयोग प्राप्त करता है तो उसकी सामाजिक बुद्धि कार्य करती है।

महत्वपूर्ण शब्द (Key Words) :– शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय विद्यार्थी, सामाजिक बुद्धि।

1. परिचय (Introduction)

सामाजिक बुद्धि से अभिप्राय व्यक्ति की वह योग्यता है जो समाज में समायोजन की क्षमता उत्पन्न करती है। सामाजिक प्राणी होने के कारण व्यक्ति को समाज में संबंध बनाने में यह बुद्धि योग्यता प्रदान करती है। इस प्रकार की बुद्धि के अंतर्गत व्यवहार कौशल के साथ व्यक्तित्व एवं चरित्र के गुण निहित होते हैं। स्वभाव, मनःस्थिति, मनोवृत्ति, ईमानदारी, निर्णय, हास्य, स्वभाव आदि कारक सामाजिक बुद्धि की ओर से संकेत करते हैं। बहुत से व्यक्ति असामाजिक या सामाजिक बुद्धि न होने के कारण अपने जीवन में असफल हो जाते हैं। सामान्यतः अमूर्त एवं सामाजिक बुद्धि साथ–साथ चलती है। नेतागण इसी बुद्धि के उपयोग से जन–जीवन में लोकप्रिय होकर प्रतिनिधि बन जाते हैं। सभ्यता के समूचे विकास में शिक्षक ही है जिसने बौद्धिक परम्पराओं और तकनीकी कौशल को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया है और हमारी सभ्यता, संस्कृति की परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखा। शिल्पकार की भांति समय की मांग के अनुरूप नई पीढ़ी तैयार करता है। नई पीढ़ी को अपनी प्राचीन सभ्यता एवं सांस्कृतिक धरोहरों तथा आधुनिक युग के बीच सामंजस्य करना सिखाता है। शिक्षा की समूची प्रक्रिया पारस्पारिक संवादातात्मक व क्रियात्मक है। इस प्रक्रिया का सुत्रधार होता है शिक्षक, जो ज्ञान और छात्र के बीच की कड़ी है। शिक्षा प्रक्रिया को जीवंत रखने का दारोमदार योग्य शिक्षक पर ही होता है। हालाकि हमारे शैक्षणिक कार्यक्रम में प्रमुख आधार विद्यार्थी है, अध्यापक नहीं फिर भी उनकी महत्ता कम नहीं आंकी जा सकती।

समाज के आर्थिक, राजनीतिक आध्यात्मिक व मानसिक विकास के लिये शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षक की सकारात्मक अभिवृत्ति ही उसे सफल एवं सम्मानित शिक्षक बनाती है। शिक्षक में वातावरण के अनुसार स्वयं को समायोजित या परिवर्तित करने की क्षमता होनी चाहिये। उनके स्वभाव में कठोरता का गुण निम्न व समायोजन की क्षमता अधिक होनी चाहिये तभी वे आज के बदलते परिवेश के आधुनिक युग में होने वाले शैक्षिक परिवर्तनों व प्रक्रियाओं को ग्रहण कर छात्रों को उनका लाभ दे सकेंगे। कठोरता, शिक्षक को प्रभावित करती है जिससे शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया प्रभावित होती है। यदि शिक्षक में कठोरता है तो परिवर्तनों का प्रतिरोध करेगा। यह प्रतिरोध पुराने समय के रीति–रिवाजों से, संस्कृति से, व्यवहार से स्वयं की भावनाओ से, सामाजिक परिवर्तनों से, बौद्धिक क्षमता से एवं दृष्टिकोण (सकारात्मक व नकारात्मक) आदि से संबंधित हो सकती है। शिक्षक की यह प्रवृत्ति छात्रों को प्रभावित करती है क्योंकि शिक्षक के व्यक्तित्व की छाप छात्रों पर गहरा असर छोड़ती है, जिससे शिक्षा भी प्रभावित होती है अतः शोधार्थी द्वारा शिक्षकों की कठोरता के विभिन्न पहलुओं पर एक अध्ययन किया गया।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा (Review Related Literature) :

आज के वर्तमान समय में सामाजिक बुद्धि का होना बहुत ही आवश्यक है, क्योंकि समाज में उत्पन्न होने वाली समस्याओं से तनाव एवं विभिन्न प्रकार की विषमतायें पैदा हो रही है, जो सामाजिक एवं पारंपरिक नियमों को तोड़ने का प्रयत्न करते हैं। सामाजिक बुद्धि एक मूल तत्व के रूप में समाहित होकर व्यक्ति को आंतरिक एवं बाह्य रूप से योग्य बनाने का प्रयास करता है।

- सास्वत (1982) ने दिल्ली के माध्यमिक शाला के छात्रों को सामाजिक बुद्धि का सामाजिक समायोजन के साथ धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध देखा।
- प्रहलाद (1982), भारद्वाज (1986), शर्मा (1986) ने विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाले कला व विज्ञान, विज्ञान व वाणिज्य, कला व वाणिज्य विषय के छात्रों की सामाजिक बुद्धि में अन्तर पाया।
- किरिंग (1978) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि सामाजिक बुद्धि एवं संवेदना के मध्य संबंध या

उच्च स्तर के शैक्षिक मूल्यों एवं सामाजिक योग्यता के मध्य अधिक समानता पायी गई।

3. उद्देश्य एवं परिकल्पना (Objective And Hypothesis)

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं –

- महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मापन करना।
- महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मापन करना।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षत्र के वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मापन करना।
- शहरी क्षेत्र के विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मापन करना।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मापन करना।

अध्ययन की परिकल्पना (Hypothesis of the Study)

1 शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

2 शासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

3 शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

प्रणाली एवं प्रक्रिया (Methodology And Procedure)

विधि (Method) :– प्रस्तुत शोध अध्ययन शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन उद्देशीय न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है।

जनसंख्या (Population) :– इस शोध अध्ययन के लिए शोधकर्त्ता ने आणंद – गुजरात शहर के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया है।

न्यादर्श (Sampling) :– प्रस्तुत लघु शोध में उद्देशीय न्यादर्श विधि द्वारा 80 शासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों एवं 80 अशासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

विस्तार एवं सीमांकन (Scope And Delimitation) :– इसमें आणंद – गुजरात क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों तक सीमित है। यह अध्ययन महाविद्यालयीन विद्यार्थियों तक सीमित हैं। इस अध्ययन के अंतर्गत विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों तक सीमित हैं।

उपकरण (Tools) :– प्रस्तुत शोध कार्य में विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि को जानने हेतु डॉ. एन.के. चड्ढा द्वारा निर्मित 'सोशियल इन्टेलिजेन्स स्केल' का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधि (Statistical Techniques) :– इस शोध अध्ययन में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं 'टी' मूल्य का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं चर्चा (Analysis and Discussion)

प्रमाणित कल्पनाएँ (Verification of Hypothesis)

1 शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा। उपरोक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु शासकीय महाविद्यालय के 80 तथा अशासकीय महाविद्यालय के 80 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया एवं सामाजिक बुद्धि मापनी की सहायता से प्राप्त मूल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा 'टी' मूल्य की गणना की गयी है। जिसका विवरण अग्रलिखित तालिका में दिया गया है –

क्रम	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी'–मूल्य
1	शासकीय महाविद्यालय	80	105.38	14.40	0.201
2	अशासकीय महाविद्यालय	80	106.90	15.63	

df = 158, P > 0.05 सार्थक अंतर नहीं है।

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन 105.38 व 14.40 तथा 106.90 व 15.63 प्राप्त
हुआ तथा दोनों के मध्य 'टी' मूल्य का मान 0.201 प्राप्त हुआ। जो कि स्वतंत्रता की कोटि 158 पर 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है, जो यह प्रदर्शित करता है कि हमारी परिकल्पना स्वीकृत है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

2 शासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपरोक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु शासकीय महाविद्यालय के विज्ञान संकाय के 40 तथा वाणिज्य संकाय के 40 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया एवं सामाजिक बुद्धि मापनी की सहायता से प्राप्त मूल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा 'टी' मूल्य की गणना की गयी है। जिसका विवरण अग्रलिखित तालिका में दिया गया है –

क्रम	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी'–मूल्य
1	शासकीय महा. के विज्ञान संकाय के विद्यार्थी	40	106.90	14.40	0.95
2	शासकीय महा. के वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी	40	103.88	14.20	

df = 78, P > 0.05 सार्थक अंतर नहीं है।

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के अंतर्गत शासकीय महाविद्यालय के विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मध्यमान 106.90 व 103.88 है तथा प्रमाणिक विचलन 14.40 व 14.20 प्राप्त हुआ तथा दोनों के मध्य 'टी' मूल्य का मान 0.95 प्राप्त हुआ। जो कि स्वतंत्रता की कोटि 78 पर 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है, जो यह प्रदर्शित करता है कि हमारी परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शासकीय महाविद्यालयीन विज्ञानं एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

3 शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपरोक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु शासकीय महाविद्यालय के विज्ञान संकाय के 40 तथा अशासकीय महाविद्यालय के विज्ञान संकाय के 40 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया एवं सामाजिक बुद्धि मापनी की सहायता से प्राप्त मूल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा 'टी' मूल्य की गणना की गयी है। जिसका विवरण अग्रलिखित तालिका में दिया गया है –

क्रम	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी'–मूल्य
1	शासकीय महाविद्यालय विज्ञान संकाय के विद्यार्थी	40	106.90	14.40	0.04
2	अशासकीय महाविद्यालय विज्ञान संकाय के विद्यार्थी	40	106.78	15.79	

df = 78, P > 0.05 सार्थक अंतर नहीं है।

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट है कि विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के अंतर्गत शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मध्यमान 106.90 व 106.78 है तथा प्रमाणिक विचलन 14.40 व 15.79 हुआ तथा दोनों के मध्य 'टी' मूल्य का मान 0.04 प्राप्त हुआ। जो कि स्वतंत्रता की कोटि 78 पर सार्थकता पर 0.05 पर सार्थक अंतर नहीं है, जो यह प्रदर्शित करता है कि हमारी परिकल्पना स्वीकृत होती है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयीन अध्ययनरत् विज्ञान संकाय के विद्यार्थिय की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

संदर्भित ग्रन्थ (References)

1. शर्मा श्वेता एवं गिर सोफिया (2006) – सेक्स डिफरेन्स इन सोशियल मेच्यूरिटी साइकोलिंग्वा, वाल्यूम–36।
2. शर्मा, गंगाराम (2004) – शिक्षा मनोविज्ञान।
3. जैन प्रभा व पटेल (2003) – ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ सोशियल मेच्यूरिटि ऑफ टीचिंग एप्टीट्यूट ऑन जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ साइकोमेट्रीक एण्ड एजुकेशन, जनवरी, 2001, वाल्यूम–32।
4. पाठक, पी.डी. एवं सिंग, देवेन्द्र (2000) – शिक्षा मनोविज्ञान भारतीय एवं इंडियन जरनल ऑफ साइक्रोमेट्रिक एण्ड बिस्ट एजुकेशन, वाल्यूम–33 (1)
5. कपिल, एच.के. (1984) – अनुसंधान विधियाँ।
6. गेरेट, हेनरी ई. (1980) – शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी प्रकाशन, लुधियाना।
7. वर्मा, पी. और श्रीवास्तव, डी.एम. (1979) – आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पेज नं. 21–22।

नरेन्द्रकुमार हमीरभाई भादरका
श्रीमती के. एम. जे. पटेल हाइस्कुल सायमा (खंभात – गुजरात)